S/329

राष्ट्रहित !　　उद्योगहित !!　　मजदूरहित!!!

पश्चिमी देशों में—
"श्रम संघवाद"

एक तुलनात्मक समीक्षा

1·20

"जहाँ ट्रेडयुनियन प्रबल है,
वहाँ कम्युनिज्म नहीं आ सकता।"

—दत्तोपंत ठेंगडी

प्रकाशक

भारतीय मजदूर संघ
बिहार प्रदेश

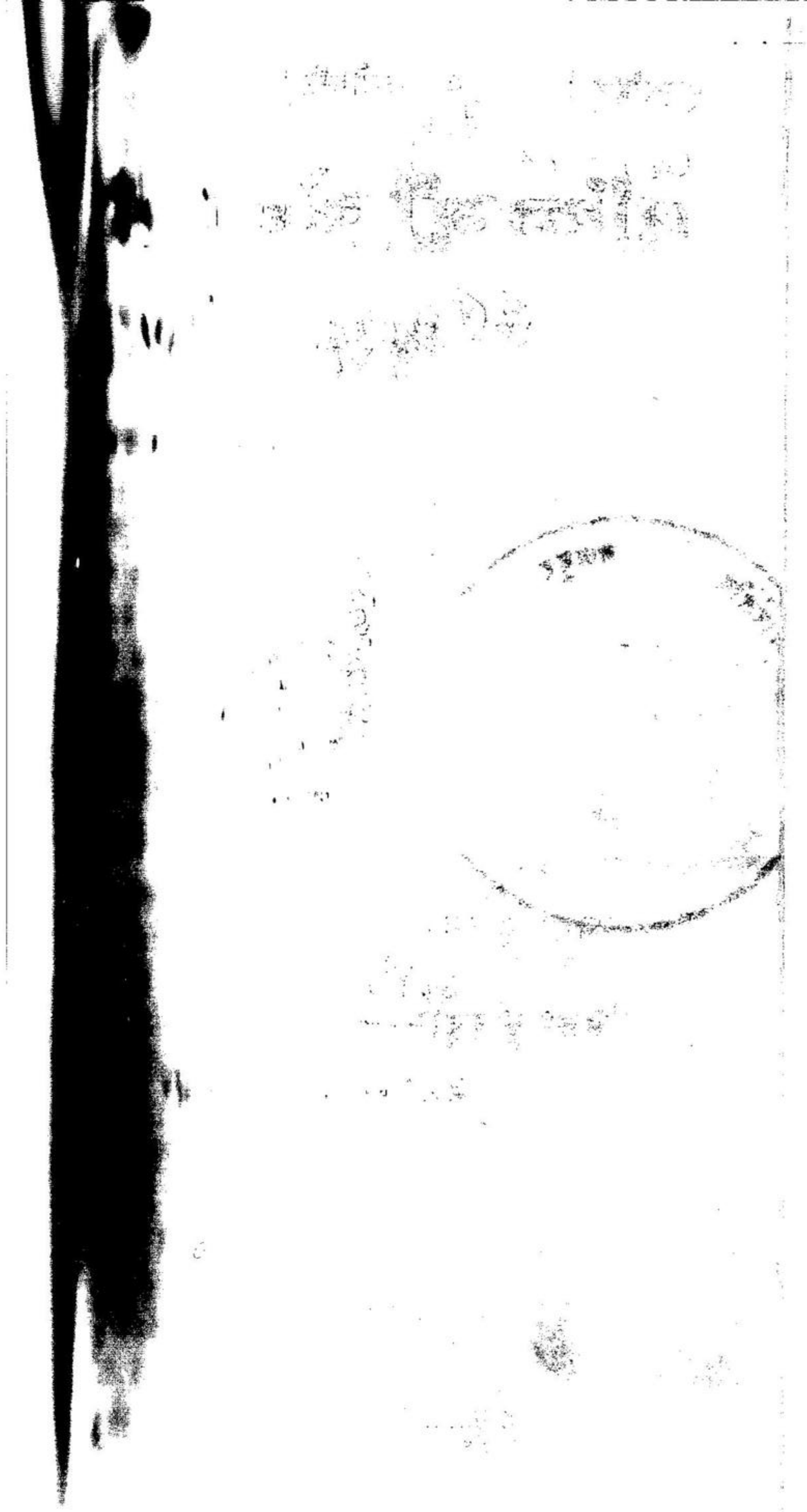

हरेक देश के ट्रेड युनियन आंदोलन के बारे में विल्कुल डिटेल्स और जानकारी प्राप्त करना यों तो किसी के लिये भी शायद संभव नही है, लेकिन मोटे तौर पर ट्रेड यूनियन आन्दोलन की सूरत, शक्ल दुनिया में कैसी है इसका विचार किया जा सकता है। इस दृष्टि से जो विभिन्न देश है उनको कई एक वर्गों में बाँटा जा सकता है। कुछ तो देश ऐसे हैं जो अभी-अभी स्वतंत्र हुए हैं. छोटे हैं, जागृत नहीं है, ज्यादा औद्योगीकरण नहीं हुआ है। थोड़ी बहुत प्राथमिक अवस्था में हैं, प्रीमीटीव स्टेज में है, खासकर अफ्रीका के देश इसमें आते हैं। स्वाभाविक रूप से वहाँ ट्रेड युनियन आन्दोलन केवल प्रारम्भिक अवस्था में है। यह स्वाभाविक है। इसको यदि छोड़ दिया तो दो तरह का वर्गीकरण देशों का किया जा सकता है। एक जहाँ डिक्टेटरशीप है और दूसरा जहाँ डिक्टेटरशीप नहीं है। क्योंकि जहाँ डिक्टेटरशीप नहीं है वहाँ भी एक ही ढंग की पोलिटिकल सिस्टम है ऐसा नहीं है। अलग-अलग ढंग की पोलिटिकल सिस्टम अलग-अलग देशों में है। इसलिए वर्गीकरण ऐसा किया जा सकता है कि जिन देशों में डिक्टेटर शीप है वह देश, जिन देश में डिक्टेटरशीप नहीं है वह देश।

तानाशाही शासन में 'श्रमिक संघ' :

जिन देशोंमें डिक्टेटरशीप है उनके बारे में स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि वहाँ ट्रेड यूनियन आन्दोलन ठीक ढंग से, स्वतंत्र ढंग से, हेल्दी ट्रेड यूनियन आन्दोलन चल नहीं सकता है। क्योंकि डिक्टेटरशीप का माने ही होता है कि एवरीथींग फॉर दी स्टेट, एवरी थींग विदिन दी स्टेट, नथिंग आउट साईट दी स्टेट। सब कुछ सरकार के लिए, सरकार के बाहर कुछ भी नहीं, सब कुछ सरकार के अन्तर्गत। तो सर्वेसर्वा केवल शाही जहाँ हैं, वहाँ किसी भी व्यक्ति को या संस्था को मुख्यत: स्वतंत्र रूप से संगठित आन्दोलन करने की जरूरत नही रह सकती यह तो बात स्पष्ट है। अब डिक्टेटरशीप तरह-तरह की हो सकती है। लेफ्टीस्ट डिक्टेटरशीप हो सकती है, राईटिस्ट डिक्टेटरशीप हो सकती है। अलग-अलग विचारधारा रखनेवाले लोगों की डिक्टेटरशाप हो सकती है जैसे हिटलर और मुसोलिनी के पूर्व जर्मनी में और इटली में जो ट्रेड यूनियन आन्दोलन था दोनों ने उसको समाप्त किया। केवल सरकारी संस्था लेबर फ्रन्ट के नाम से हिटलर ने शुरू की और कारपोरेशन के नाम से एक नयी संस्था मुसोलिनी ने सामने लाया। जिसमें मालिक मजदूर और सरकार तीनों के प्रतिनिधि मिलकर उद्योगों के बारे में निर्णय करते थे। लेकिन स्वतन्त्र ट्रेड यूनियन

आन्दोलन को हिटलर और मुसोलिनी ने खतम किया। ऐसा सभी डिक्टेटरों के बारे में कहा जा सकता है। अफ्रीका में जो नव जागृत देश है वहाँ डिक्टेटरशीप है। वहाँ के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत करने के पश्चात् ऐसा लगा कि ये सरकार के ही प्रतिनिधि हैं, मजदूरों के प्रतिनिधि नहीं है। माने यदि इन्टरनेशनल लेबर ऑर्गनाईजेशन में सवाल उठता है कि सरकारी कर्मचारियों के अधिकार कौन से होने चाहिये तो वास्तव में ट्रेड यूनियन के प्रतिनिधियों का सरकारी कर्मचारियों के अधिकार अधिक विस्तृत करने पर आग्रह करना चाहिए। उस मंच पर खड़े होकर अफ्रीकन देश के प्रतिनिधि जहाँ डिक्टेटरशीप चल रही है, वहाँ वे प्लीड करते थे कि सरकारी कर्मचारियों पर ज्यादा नियंत्रण चाहिये और सरकारी कर्मचारियों के जो आज अधिकार है उनको छीन लेना चाहिये। ऐसी बात अन्तरराष्ट्रीय मंच पर खड़ा होकर जिनको मजदूरों के प्रतिनिधि के नाते आइ० एल० ओ० में भेजा गया था वे लोग कर रहे थे। तो स्पष्ट है कि वास्तव में वो मजदूरों का प्रतिनिधित्व नहीं कर रहे हैं, केवल अपने सरकार का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। स्पष्ट है कि उनके देश में स्वतंत्र ट्रेड यूनियन आन्दोलन नहीं है। सब कुछ सरकार के हाथ में है और इसके कारण सरकार जिसको प्रतिनिधि कहेगी वही प्रतिनिधि होता है। मजदूरों का कुछ हिस्सा नहीं है। जहाँ डिक्टेटरशीप है वहाँ स्वतन्त्र ट्रेड यूनियन आन्दोलन चलना बड़ा कठिन है।

साम्यवादी देशों के श्रमिक संघ :

कम्युनिस्ट देशों का भी यही अनुभव है। अब यह ठीक है कि सभी कम्यूनिस्ट देशों में एक ही सिस्टम नहीं है। हमारे देश में कई लोगों का ऐसा ख्याल है कि कम्यूनिज्म नाम की कोई एक सिस्टम है सभी कम्यूनिस्ट देशों में वही सिस्टम चलती है ऐसा कुछ लोग गलती से मानते हैं, ऐसा नहीं है। कम्यूनिज्म नाम की एक सिस्टम नहीं है क्योंकि कार्ल मार्क्स ने कोई ब्लू प्रिन्ट, स्पष्ट चित्र कम्यूनिस्ट समाज का नहीं दिया। लेनिन ने भी कहा है कि "कार्ल मार्क्स हैज नौट रिटेन ए सिंगल वर्ड एबाउट इकोनोमिक सोशलिज्म।" सोशलिज्म के आर्थिक शास्त्र के बारे में कार्ल मार्क्स ने कुछ भी नहीं कहा है। ऐसा लेनिन ने कहा है।

उन्होंने स्पष्ट चित्र नहीं दिया, ब्लू प्रिन्ट नहीं दिया। यह कार्ल मार्क्स की गलती नहीं है। यह बुद्धिमानी का लक्षण है, क्योंकि ब्लू प्रिन्ट नहीं दिया जा सकता, केवल मार्गदर्शक सिद्धान्त (गाईडिंग प्रिन्सपुल) बनाया जा सकता है। मार्गदर्शक सिद्धान्तों के प्रकाश में जिस समय समाज रचना करने का काम प्रारम्भ होता है, उस समय धीरे-धीरे ब्लूप्रिन्ट यह चित्र उत्क्रान्त होता है, विकसित होता है, इभोल्भ होता है। इसलिये कार्ल मार्क्स ने यदि कम्यूनिस्ट सोसायटी का

ब्लू प्रिन्ट नहीं दिया तो उसका यह दोष नहीं, यह बुद्धिमानी की बात थी। क्योंकि उसके कारण अलग-अलग कम्यूनिस्ट देशों में अलग-अलग पद्धतियाँ चल रही है। इसलिये किसी के मन में यदि यह होगा कि कम्यूनिज्म माने एक सिस्टम है और वही सिस्टम सभी देशों में चल रही है, ऐसा नहीं है। हर देश में अलग-अलग सिस्टम है।

प्रबन्धन की विविधता :

अब उदाहरण के लिए जो उद्योग है, उद्योगों का मैनेजमेंट कौन कौन करे ? उदाहरण के लिये केवल एक बात कहना उचित होगा। उद्योगों की मैनेजमेंट कौन करे, अब मैनेजमेंट किसके हाथ में हो। यह निश्चित करना कि कसौटी या देखने की कसौटी क्या है तो उद्योगों से सम्बन्धित जो निर्णय हुआ करते हैं यह निर्णय लेने का अधिकार जिसका होगा वही वास्तव में मैनेजमेंट होगा। कोई भी निर्णय हो, कच्चा माल कहाँ से लेना, मार्केटिंग कैसे करेंगे प्राईस क्या रखेंगे। मजदूरों को तनख्वाह देना यह सारा निर्णय लेने का जिनको अधिकार है वही मैनेजमेंट है। सभी कम्यूनिस्ट देशों में एक तरह की मैनेजमेंट नहीं है।

ब्यूरोक्रेटिक प्रबन्धन :

रसिया में सारा मैनेजमेंट ब्यूरोक्रेट्स की है। जैसे अपने यहाँ पब्लिक इन्टरप्राईजेज में है। हमारे यहाँ पब्लिक इन्टरप्राईजेज में मोडेल रसिया का लिया गया है। रसिया में सब कुछ ब्यूरोक्रेट्स के हाथ में है। अब ब्यूरोक्रेट्स मजदूरों के सर्वेसर्वा हैं। ट्रेड यूनियन राईट्स नहीं है। आप कहेंगे कि ट्रेड यूनियन है या नहीं ? ट्रेड यूनियन है, लेकिन स्वतन्त्र रूप से नहीं चलता सरकार का जो निर्णय होगा उस निर्णय का क्रियान्वयन मजदूरों के द्वारा करवाने के लिये सरकार और मजदूरों के बीच में मध्यस्थ के नाते यूनियन की भूमिका आती है। अंग्रेजी में जिसको लियासन (Liason) कहते हैं। लियाजन (Liason) के नाते इसकी भूमिका आती है। यदि सरकार ने निर्णय किया कि उत्पादकता (Productivity) बढ़नी चाहिये। सरकार का निर्णय मजदूर अमल में लाये इस दृष्टि से सेमी गवर्नमेंट एजेन्सी (Semi Government Agency) इस नाते वहाँ यूनियन का रोल चलता है। वही भूमिका यूगोस्लाविया छोड़कर बाकी इस्टर्न यूरोप के सभी कम्यूनिस्ट देशों में है, यद्यपि मैनेजमेंट की स्टाईल अलग-अलग है।

प्रबन्धको द्वारा प्रबन्धन :

मैनेजमेंट की स्टाईल हंगरी और चैकोस्लावकिया में रसिया से भिन्न है। रसिया में अन्तिम निर्णय लेने के सारे अधिकार रसिया के ब्यूरोक्रेट्स (अफरशाही)

के हाथ में है। हंगरी और चेकोस्लावाकिया में ब्यूरोक्रेट्स को मैनेजमेंट में नहीं रखते हैं। जो मैनेजर्स है, जिन्होंने मैनेजमेंट की ट्रेनिंग ली है, माने प्रोफेशनल मैनेजर (Professional Manager) के हाथ में मैनेजमेंट रहता है और अन्तिम निर्णय लेने के सारे अधिकार उनको हीं रहते हैं। अर्थात् प्रोफशनल मैनेजर्स की मैनेजमेंट। इस प्रकार की व्यवस्था चेकोस्लावाकिया और हंगरी में उन्होंने शुरू की है। इसके चलते रसिया के तुलना में प्रोडक्शन बढ़ने लगा है। इसके कारण रसिया के मन में उनके विषय में जेलसी (असूया) की भावना जागृत हुयी और उन्होंने हंगरी और चेकोस्लावाकिया दोनों को कहा कि यह सिस्टम तोड़ डालिए और हमारी ब्यूरोक्रेटिक सिस्टम लाईये। हंगरी ने जरा नर्मी से कहा कि नहीं हमको ऐसा प्रयोग करने दीजिए। हंगरी ने ज्यादा गड़बड़ नहीं की थी इसलिए यह सिस्टम चल रही थी। चेकोस्लावाकिया ने इस प्रश्न पर और बाकी प्रश्नों पर रसिया को डिफाई किया। इसका कारण आपको पता है रसियन टैक्स चेकोस्लाबाकिया में गये और वहाँ रसिया का साम्राज्य स्थापित हुआ और ब्यूरोक्रेसी (अफसरशाही) की सिस्टम जो रसिया में है, वही सिस्टम चेकोस्लावाकिया में लायी गयी। मैनेजेरियल मैनेजमेंट की सिस्टम यह केवल हंगरी में है। वे ऐसा रसिया को बताते हैं कि कोई हम गड़बड़ करने वाले नहीं हैं। छोटा सा राष्ट्र है क्यों डरते हैं। यह प्रयोग चल रहा है लेकिन दोनों देशों में मजदूरों को ट्रेड यूनियन के अधिकार नहीं है। केवल तटस्थ मध्यस्थ यानी लियासन के रूप में सरकार और मजदूरों के बीच सभी कम्यूनिस्ट देशों में सेमी गवर्नमेंट डिपार्टमेंट के नाते यूनियन का काम चल रहा है। इसमें यूगोस्लाविया का भी नाम है। यूगोस्लाविया में मैनेजमेंट दूसरे ढंग की है।

प्रबन्धन में मजदूरों का सहभाग :

वहाँ मैनेजमेंट के अन्तिम अधिकार मजदूरों को हैं। यह ठीक है कि सारी सम्पत्ति सरकार की मानी जाती है, कम्युनिस्ट की दृष्टि से सारी भूमि और कारखाना सरकार का है. ऐसा कानून में लिखा गया है। लेकिन प्रत्यक्ष व्यवहार में हर फैक्ट्री के मजदूर अपने से संबंधित सभी निर्णय लेते हैं। इस दृष्टि से वहाँ मजदूरों की मैनेजमेंट है जिसको ऑटो मैनेजमेंट कहते हैं। मजदूरों की मैनेजमेंट है। यही मैनेजमेंट के तीन नमूने हमारे सामने आते हैं। रसियन कम्युनिस्ट-ब्यूरोक्रेटिक मैनेजमेंट, हंगरी भी कम्युनिस्ट—मैनेजेरियल मैनेजमेट, यूगोस्लाविया कम्यूनिस्ट-वर्कस मैनेजमेंट, । तीन अलग-अलग टाईप है।

कम्यूनिस्ट देशों में ट्रेड यूनियन स्वतन्त्र नहीं :

यूगोस्लाविया में ट्रेड यूनियन की क्या पोजीशन है इसके विषय में बाद में विशद् विस्तार से और स्पष्टीकरण करना चाहता हूँ किन्तु कम्युनिस्ट देशों में

डिक्टेटरशीप होने के कारण ट्रेड यूनियन का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। चाईना में तो माओ के रहते हुए "औल चाईना फेडरेशन औफ लेबर" को बर्खास्त किया गया था। उनको डिजोल्भ किया था। माओ की मृत्यु के पश्चात् अब फिर से ट्रेड युनियन की एक्टीवीटीज हो रही है। उसका स्वरूप क्या है इसका पता नहीं है। माओ के जीवित रहते हुए "औल चाईना फेडरेशन औफ लेबर" को बर्खास्त किया था। नया स्वरूप क्या है पता नहीं है। जहाँ-जहाँ डिक्टेटरशीप है वहाँ ट्रेड यूनियन आन्दोलन स्वतंत्र रूप से नहीं चलता। वैसे दूसरा भी दिखता है जहाँ-जहाँ ट्रेड यूनियन आन्दोलन मजबूत है वहाँ डिक्टेटरशीप नहीं आ सकता है। माने डेमोक्रेसी के वगैर ट्रेड यूनियन आन्दोलन नहीं चल सकता है। जहाँ ट्रेड यूनियन आन्दोलन प्रबल है डिक्टेटरशीप नहीं आ सकता। जहाँ ट्रेड यूनियन आन्दोलन प्रबल है, वहाँ कम्यूनिज्म नहीं आ सकता। इसी कारण से लेनिन ने स्पष्ट रूप से लिखा था कि कम्यूनिस्टों को हर संस्था में घुसना चाहिये। धार्मिक संस्था में भी घुसना चाहिये और उसको कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रोपेगन्डा के माध्यम के रूप में प्रयोग लाना चाहिये। वैसे ट्रेड यूनियन में घुसना चाहिये और यह देखना चाहिये कि ट्रेड यूनियन सही ढंग से काम करने वाले ट्रेड यूनियन कार्यकर्त्ताओं के हाथ में नहीं रहे। अपनी कम्यूनिस्ट पार्टी के हाथ में रहनी चाहिए। इसके लिये जो ट्रेड यूनियन सही ढंग से काम काज करती है उनको बदनाम करना चाहिये। उनके खिलाफ वही ह्विस्परिंग कैमपेन चलाना चाहिये। उनके खिलाफ झूठे एसकैन्डल्स (Scandals) फैलाना चाहिये। यह सारा लेनिन ने लिखित दिया है।

अविश्वसनीय कम्यूनिस्ट

लोग कम्यूनिस्टों को गाली देते हैं कि साहब ये कम्यूनिस्ट अनडिपेन्डेबुल हैं। विश्वसनीय नहीं है, धोखा देने वाले हैं ऐसा कहने वाले गलत हैं। कम्यूनिस्ट किसी को धोखा नहीं देते। एक किताब निकली है उसका नाम है "यू कैन ट्रस्ट दी कम्यूनिस्ट"। "You can trust the communist"। आप कम्यूनिस्टों पर विश्वास रख सकते हैं। भरोसा रख सकते है, क्यों ? क्योंकि वे कितने ढंग से धोखाधड़ी करने वाले है यह सारा लिखा हुआ है। अब आप पढ़ते नहीं है, आपका दोष है। उनका दोष नहीं। वे आपको डिसीव नहीं कर रहे हैं। वे आपको छका नहीं रहे है। आप ही पढ़ते नहीं है आपका दोष है।

मार्क्स की गलत भविष्यवाणी

तो जहाँ-जहाँ ट्रेड यूनियन आन्दोलन प्रबल है वहाँ कम्यूनिज्म आ नहीं सकता, यह भी दिखता है। उदाहरण के लिये कार्ल मार्क्स का ऐसा कहना था कि सर्वप्रथम कम्यूनिस्ट क्रान्ति कहीं होगी तो जो हाईली इंडस्ट्रीयलाईज्ड ऐसे देश है

उन देशों में होगी । क्योंकि उन देशों में औद्योगिक मजदूरों की संख्या ज्यादा रहेगी । ऐसे तीन देशों का नाम उन्होंने लिया था । एक इंगलैंड, दूसरा जर्मनी और तिसरा यूनाईटेड स्टेट्स अमेरिका । अब आपको पता है तीनों देशो में कम्यूनिज्म नहीं आ सकता । कम्यूनिज्म नहीं आ सका । इसका एक प्रमुख कारण ट्रेड यूनियन भी है । इंगलैंड में कम्यूनिज्म क्यों नहीं आया इसका विवरण करते हुए विचारकों ने ऐसा कहा है कि इगलैंड में पहले कम्यूनिज्म आया था ऐसा कार्ल मार्क्स ने इग्लैंड में रहते हुए भविष्यवाणी की थी । किन्तु वह सत्य नहीं निकली । इसका कारण है कुछ आन्दोलनों के विषय में कार्ल मार्क्स की भविष्यवाणी (Predictions) गलत निकली । ट्रेड यूनियन, कोऑपरेटिव मूवमेंट और वेस्टर्न पार्लियामेन्ट्री डिमोक्रेटिक सिस्टम तीनों की शक्ति के बारे में कार्ल मार्क्स की भविष्यवाणी गलत थी । और इन सब के दबाव के कारण कैपिटलिज्म भी अपना स्वरूप बदल सकता है इसका वे अन्दाजा नहीं कर सके । इसके कारण इगलैन्ड में कम्यूनिस्ट क्रान्ति नहीं आ सकी । ऐसा विचारकों ने कहा है । एक प्रमुख कारण यह भी है कि जहाँ ट्रेड यूनियन मूवमेंट प्रबल रहता है वहाँ कम्यूनिज्म नहीं आ सकता । कितने देशों में डिक्टेटरशीप होने के कारण आम तौर पर ऐसा दिखता है कि स्वतंत्र ट्रेड यूनियन आन्दोलन नहीं चलता । ट्रेड यूनियन को केवल सेमी गवर्नमेंट डिपार्टमेंट के नाते चलाया जा रहा है ।

प्रजातांत्रिक देशों का श्रमिक आंदोलन

अब जो डेमोक्रेटिक कंट्रीज है वहां भी सब जगह ट्रेड यूनियन आन्दोलन एक तरह का नहीं है । लोकतांत्रिक देशों में सबसे महत्वपूर्ण ट्रेड यूनियन की दृष्टि से और लोकतंत्र के दृष्टि से कोई देश होगा तो वह इंगलैंड है । यह ठीक है कि आज इंगलैंड गिरी हुई अवस्था में है । आज विश्व का नेतृत्व नहीं कर रहा है, किन्तु वेस्टर्न पार्लियामेंट्री डिमोक्रेसी (Western Parliamentary democracy) का प्रारम्भ इंगलैंड में हुआ । ट्रेड यूनियन आन्दोलन का प्रारम्भ इंगलैंड में हुआ । इस दृष्टि से ट्रेड यूनियन और वेस्टर्न डिमोक्रेसी दोनों का जन्म दाता इंगलैंड है । इंगलैंड का महत्वपूर्ण स्थान है । अब उस इंगलैंड में ट्रेड यूनियन कैसे निकला । शुरू में सभी भौतिकतावादी होने के कारण जिनके हाथ में मशीनरी आयी वे लोग मशीनरी पर कम-से-कम पैसा देकर ज्यादा-से-ज्यादा काम मजदूरों से लेने की कोशिश करते थे । बच्चों को, महिलाओं को, बूढ़ों को काम पर लगाते थे । उनकी सुख सुविधा की बिल्कुल फिक्र नहीं करते थे । 18-18, 20-20 घंटा तक काम लेते थे । बच्चो से भी काम लेते थे । इसके खिलाफ प्रतिक्रिया हुई ।

मजदूरों ने एसोशियेसन बनाया और बाद में उसे ट्रेड यूनियन नाम दिया। उन सब का एकत्रीकरण हुआ। उसका ब्रिटिश यूनियन कांग्रेस नाम दिया गया।

अब इंगलैंड के इतिहास से ट्रेड यूनियन में हमलोगों के लिये शिक्षा लेने योग्य कुछ बातें हैं। हिन्दुस्तान के लिए आज की परिस्थिति में सिखने लायक कुछ बातें इंगलैंड के ट्रेड यूनियन आन्दोलन में है। इंगलैंड में मोटे तौर पर एक ही ट्रेड यूनियन है। "सेन्ट्रल लेबर आर्गेनाईजेशन" एक ही है वह है। "ब्रिटिश ट्रेड यूनियन कांग्रेस।" हम ऐसा कह सकते हैं कि ज्यादातर उद्योगों में हरेक उद्योगों केबारे में नहीं कहा जा सकता एक उद्योग में एक ही यूनियन है। बहुत सारे यूनियन "ब्रिटिस ट्रेड यूनियन कांग्रेस" के अन्तर्गत हैं। इसके कारण मजदूरों की बार्गेनिंग कैंपेसिटी (सौदेबाजी की क्षमता) अच्छी हैं।

राजनीतिक दल और श्रमिक संगठन साथ-साथ नहीं चल सकते :

अब हमारे लिये सिखने योग्य बातें उसमे है यह है कि "राजनीति और ट्रेड यूनियन" आन्दोलन का क्या सम्बन्ध रहे। इसका एक प्रयोग, एक उदाहरण ग्रेट ब्रिटेन में हमें मिलता है। ब्रिटिस ट्रेड यूनियन कांग्रेस का निर्माण सर्वप्रथम हुआ। बाद में कुछ मजदूर नेताओं को लगा कि लेबर पार्टी भी होनी चाहिये। ब्रिटिस ट्रेड यूनियन कांग्रेस और कुछ सोशलिस्ट इन्टेलेकचुअल (Socialist Intellectuals) ने मिलकर ब्रिटिस लेबर पार्टी की स्थापना की। अर्थात ब्रिटिश लेबर पार्टी, ब्रिटिश ट्रेड यूनियन कांग्रेस का बच्चा है। बहुत दिनों तक लोगों को ऐसा लगा कि लेबर पार्टी और ट्रेड यूनियन दोनों साथ-साथ चल सकता है। जैसा कि अपने यहाँ लोगों की धारणा है कि पार्टी और ट्रेड यूनियन दोनों साथ-साथ चल सकता है। ऐसी धारणा उनकी थी। इस दृष्टि से 1945 तक अर्थात जबतक लेबर पार्टी की सरकार क्लियर मैजोरिटी (स्पष्ट बहुमत) में नहीं आयी तबतक ब्रिटिश ट्रेड यूनियन कांग्रेस और लेबर पार्टी दोनों साथ साथ चल रही थी। राजनीतिक बदल और श्रमिक आंदोलन साथ साथ नहीं चल सकते। कारण सीधा था कि दोनों को ही आपोजीशन का काम करना था। इनके हाथ में सत्ता नहीं थी। इनको भी सरकार को गाली देनी थी और उन्हें भी सरकार को गाली देनी थी। गाली देने की प्रक्रिया में एकता होने में देर नहीं लगती। यह केवल गाली देने का काम था। इसके कारण दोनों एक साथ चल सके। लेकिन जैसे ही 1945 में लेबर पार्टी की क्लियर मैजोरिटी, (स्पष्ट बहुमत) आ गयी तब से कितने ही बार लेबर पार्टी पावर में आयी है और पावर से गयी है. लेकिन 1945 से आजतक का ग्रेट ब्रिटेन का इतिहास देखें तो ऐसा दिखता है कि जैसाकि उनको पहले लगता था राजनीतिक दल और ट्रेड यूनियन साथ साथ चल सकता है, बाद में अनुभव हुआ कि ये भ्रम में हैं, गलत बात है। यह हो नहीं सकता।

राजनीतिक दल का उद्देश्य अलग ढंग का होता है और ट्रेड यूनियन का इन्टरेस्ट अलग ढंग का होता है। राजनीतिक दल को तो सब का वोट पाकर पावर में आना है। ट्रेड यूनियन में मजदूरों के ही हित की रक्षा करनी है। इसके कारण यदि कोई राजनीतिक दल केवल मजदूरों पर विचार करके शासन चलायेगा तो अगले बार शायद चुनकर नहीं आयेगा। इसलिये हर समय मजदूरों की मांगों का समर्थन करना सत्ता में आने के बाद शासक दल को संभव नहीं होता। यह अनुभव वहाँ उनको है।

वास्तव में हिन्दुस्तान में परिस्थिति और भी खराब है। ग्रेट ब्रिटेन में कुल मिलाकर जो राष्ट्रीय खर्चा (National Expenditure) है उसका दो तिहाई हिस्सा वेतन के बटवारे में जाता है, पारिश्रमिक के रूप में जाता हैं। वहाँ औद्योगिक मजदूरों की संख्या कितनी ज्यादा है हमारे देश की तुलना में। हमारे देश का जो कुल मिलाकर राष्ट्रीय खर्चा उसका एक तिहाई से कम हिस्सा वेतन में जाता है। हमारा एक तिहाई से कम हिस्सा वेतन में जाता हैं और उनका दो तिहाई से ज्यादा हिस्सा वेतन में जाता है। इतना होते हुए भी, औद्योगिक मजदूरों की संख्या इतना अधिक होते हुए भी ब्रिटिश लेबर पार्टी और ब्रिटिश ट्रेड यूनियन कांग्रेस में संघर्ष होते हैं। आपने देखा होगा कि ब्रिटिश लेबर पार्टी के पावर में रहते हुए ब्रिटिश ट्रेड यूनियन कांग्रेस ने हड़तालें की है, और यह उदाहण स्पष्ट रूप से बतलाता है कि राजनीतिक दल और ट्रेड यूनियन साथ साथ नहीं चल सकता है। ट्रेड यूनियन का अपना अलग उद्देश्य है अलग प्राथमिकता है, अलग कार्य हैं और राजनीतिक दलों की अलग भूमिका है, कार्य हैं, उद्देश्य हैं। दोनों मिलकर साथ-साथ चलने का प्रयास करेंगे तो थ्री लैग्ड रेश हो जायगा। इस दौड़ में दौड़ने वाले दूरी-दूरी पर खड़े हो जाते हैं। हर दो आदमी में एक का वायां पैर और दूसरे का दायां पैर बाँध दिया जाता है। कहा जाता है कि अब दौड़ो। मान लिया गया कि एक आदमी प्रतिघंटा 20 मील दौड़ सकता है दूसरा हर घंटा में 20 मील दौड़ सकता है। कीई भी हिसाब लगायेगा कि दोनों का पैर एक दूसरे से बाँधने से 20 और 20 चालीस मील तेजी से दौड़ सकेंगे। लेकिन ऐसा नहीं होता। एक फर्लांग के अन्दर हीं दो तीन बार गिर जोते हैं पैर बंधे रहने से यह थ्री लैग्ड रेस हों जाता है। इस कारण न ट्रेड यूनियन की प्रगति होती है न राजनीति दल की। वैसे स्पष्ट उदाहरण हमारे सामने हैं। जिन्होंने इतने साल तक यह शान्तिपूर्ण कल्पना मन में रखी थी कि राजनीतिक दल और ट्रेड यूनियन साथ-साथ चल सकते हैं उनका भी भ्रम दूर हुआ। इस प्रकार ब्रिटिश ट्रेड यूनियन कांग्रैस को ब्रिटिश लेबर पार्टी से लोहा लेना पड़ा। यह एक उदाहरण हमारे लिये उद्घोषक भी हो सकता है।

"राजनीतिक श्रम संघवाद"

ग्रैट ब्रिटेन का उदाहरण छोड़ दिया जाय तो ऐसा दिखता है कि यूरोप के महत्वपूर्ण देशों में कम्यूनिस्ट जिसको पौलिटिकल यूनियनिज्म कहते हैं वह चलता है। पौलिटिकल यूनियनिज्म का मतलब है जो अपने देश में भी चल रहा है। (भारतीय मजदूर संघ को छोड़ अन्यत्र चल रहा है) पौलिटिकल पार्टी के अंग के रूप में ट्रेड यूनियन का काम चलाना। तो इस प्रकार की व्यवस्था फ्रांस में है, इटैली में है, बैल्जियम में है, स्कैन्डैनीवीयन देशों में है। इस तरह से पोलिटिकल यूनियनिज्म चल रहा है। इसके कारण एक ही उद्योगों में एक से ज्यादा यूनियनें हैं। एक से अधिक सेन्ट्रल लेबर ऑगेनाईजेशन हैं। इसके कारण वहाँ का मजदूर बँटा हुआ है (इतना बँटा हुआ नहीं कि जितना हिन्दुस्तान का मजदूर है)। तो भी सारे यदि एक हो जाते तो मजदूर जितना बलवान होता, इतना बलवान आज नहीं है और विशेष रूप से गाँवों का। इन देशों में पोलिटिकल यूनियनिज्म ने इंट्रोडक्शन किया और कन्युनिस्टों के मुकाबले में सोशलिस्ट और बकिये लोगों ने अपनी यूनियनें निकाली। इस तरह से जो वेस्टर्न पार्लियामेन्ट्री डिमोक्रेटिक सिस्टम वाले देश हैं, इन देशों में पोलिटिकल यूनियनिज्म चल रही हैं। एक से अधिक यूनियन हर उद्योग में है। ऐसा दृश्य दिखायी देता है। वहाँ भी एक सेन्ट्रल ऑगेनाईजेशन आगे बढ़ता है तो कभी दूसरा आगे बढ़ता है। कम्पीटिशन में कभी किसी की विजय तो कभी किसी की विजय। इस तरह से अलग सिस्टम वहाँ दिखायी देता है। पार्लियामेंन्ट्री डिमोक्रेटिक सिस्टम (Parliamentory Democratic System) भी है। ट्रेड यूनियन मूभमेंट भी है। ट्रेड यूनियम मूभमेंट सरकार से स्वतंत्र है, लेकिन पार्टी से स्वतंत्र नहीं है। पार्टी के अन्तर्गत काम करती है उसके जो अच्छे बुरे परिणाम हों। उसके होते हुए भी आप अन्दाज कर सकते हैं। अभी मैं विदेश यात्रा पर गया था। इंगलैंड भी उसमें था। इंगलैंड में कन्जरवेटिव पार्टी की गवर्नमेंन्ट मिसेज थैचर की है और पिछले दिनों में जो कुछ हड़तालें हुई, जिसके कारण सर्वसाधारण जनता में ट्रेड यूनियन आन्दोलन के बारे में कुछ गलत भावनायें, कुछ घृणा की भावना का निर्माण हुआ कि ये मजदूर हड़ताल करते हुए हमको तंग करते हैं। इसी का लाभ उठाकर मिसेज थैचर प्राईम मिनिस्टर भी सोच रही है कि एक नया बिल ब्रिटिश पार्लियामेंट के सामने लाया जाय, जिसमें हड़ताल के अधिकार पर अंकुश लगाया जायगा। लेकिन अभी पूरी जनमत तैयार नहीं है। जनमानस पूरा तैयार हो इसलिये सरकार का प्रयास चल रहा है कि बड़े यूनियनों को हड़ताल करने पर उतारू करना चाहिये, बाध्य करना चाहिये। इनको हड़ताल करना चाहिये ताकि फिर जनता संत्रस्त होगी तो इसके खिलाफ जनमत हो जायगा। इस प्रकार हड़ताल रूकाबट लाने वाला बिल पास हो जायगा। तो सरकार कोशिश कर रही है कि हड़ताले होनी चाहिये और ब्रिटिश

ट्रेड यूनियन कांग्रेस के नेता मजदूरों को समझा रहे हैं कि हड़ताल करना ठीक नहीं है। हड़ताल नहीं कीजिये, क्योंकि एक नयी तलवार सिर पर लटक रही है; वह गिर जायगी; हमारा सर फूट जायगा। सरकार का प्रयास है कि—हड़ताल होनी चाहिए और मजदूर नेताओं का प्रयास है कि नहीं—इस तरह की हड़ताल टालनी चाहिये। यह दृश्य आज वहाँ का है।

इंग्लैंड के मजदूरों के मन में भारतीय मजदूरों के प्रति द्वेष

वहां भारतीय मजदूर भी काफी है। लन्दन में तो भारतीयों की संख्या बहुत ज्यादा है बल्कि वहाँ डौक्टर्स हैं, इंजीनियर्स हैं, प्रोफेसर्स हैं प्रोफेशनल्स भी हैं, जिनकी संख्या बहुत ज्यादा है। एक मुहल्ला लन्दन में ऐसा है (साउथ हौल), जहाँ भारतीयों की संख्या ज्यादा है। खासकर सिक्खों की संख्या ज्यादा है। इसलिये लन्दन वाले उस मोहल्ले को "टरबन टाउन" कहते हैं। हिन्दुस्तान से गये हुए, भारतीय वहाँ हैं, पूर्वी अफ्रीका से गये हुए, कैन्या, यूगान्डा से गये हुए हैं और यहाँ जो भारतीय हैं, वे वहाँ सस्ते में काम करने के लिये तैयार हो जाते हैं। इसके कारण इंगलिश मजदूरों के मन में भारतीय मजदूरों के बारे में विद्वेष की भावनायें है क्योंकि भारतीय मजदूर अपनी उपजीविका के लिये वहाँ है वह कम पैसा में काम करने के लिये तैयार हो जाता है। इसके कारण वहाँ विद्वेष की भावना भारतीय मजदूरों के बारे में है। इनको नहीं आने देना चाहिये और जो हैं उनको भगाना चाहिये इस प्रकार की भावना है। इसके लिये क्या कोशिश की जानी चाहिये इस पर विचार चल रहा है। एक तरह से खींचातानी है। दूसरे जिन दो देशों में मैं गया वह एक कनाडा है और दूसरा अमेरिका। कनाडा में लगभग वही ट्रेड यूनियन की हालत है जो यूनाईटेड स्टेट्स में हैं। जो परिस्थिति यूनाईटेड स्टेट्स की है वही कनाडा की भी है लेकिन एक बात कनाडा की विशेषता है कि यूनाईटेड स्टेटस में जो भारतीय गये हैं वे सारे प्रोफेशनल्स हीं है, कोई मजदूर नहीं हैं। वहाँ कोई डाक्टर, इंजीनियर, प्रौफेसर और वकील नहीं हैं। लेकिन कनाडा में और इग्लैंड में मजदूरों की संख्या ज्यादा है।

'कनाडा में भारतीय हो भारतीय श्रमिकों के शोषक हैं।'

कनाडा में जो भारतीय मजदूर है वे विशेष सख्या में पच्छिम कनाडा में है और वहां की खेती ही में लगे हुए है, फैक्ट्री में कम लगे हुए है। लेकिन वहां का दृश्य देखकर बहुत दुख होता है। खेती में भारतीय मजदूर लगभग शत प्रतिशत पंजाब से ही गये हुए हैं। अब उनको यूनियन बनानी पड़ी। विशुद्ध भारतीयो की यूनियन है, क्योंकि खेती उद्योग में पश्चिम कनाडा में बहुत सारे क्षेत्र में भारतीय ही मजदूर हैं। मुझे ऐसा लगा कि शायद यहां कैनेडियन भरसेस इंडियन लेबर होगा, पर ऐसा नहीं

है। दुखद चीज और शर्म की बात यह है कि वहां भारतीय भरसेस भारतीय ही झगड़ा है। यानी पश्चिम कनाडा में खेती उद्योग में प्रमुख रूप से भारतीय और पंजाब के ही मजदूर है और वहां कंट्रेक्टर भी पंजाबी हीं हैं। पजाबी ठेकेदारों के खिलाफ पंजाबी मजदूरों का यूनियन बनाते हुए संघर्ष लेना हमारे मजदूरों के लिये वहाँ वाध्यता है। इसके कारण भारतीय विरुद्ध भारतीय ऐसा दृश्य कनाडा में दिखता है। जिसके कारण भारतीयों को शर्म से नीचे गर्दन झुकानी पड़ती है।

अमेरिकी श्रम-संगठनों में कम्युनिस्टों का प्रवेश नहीं :

यह बात आपको बता दूँ कि जहाँ तक युनाईटेड स्टेट्स का सवाल है, मेरा यह जो दौरा था वह यूनाईटेड स्टेट्स के Labour डिपार्टमेंट की ओर से था। उनकी इच्छा थी कि भारतीय मजदूर संघ एक संस्था है, आगे बढ़ रही है इसके नेताओं को भी अमेरिकन श्रम आन्दोलन के बारे में जानकारी हो, इस दृष्टि से बुलाया गया था। 30 दिनों का दौरा था। इस बीच में हम काफी स्थानों में गये और यूनियन्स देखी और कुछ कारखाने भी देखे। मजदूरों को जो सिखाने के लिये व्यवस्था है वह भी देखी। अलग-अलग एक महीने में जितना हो सकता है ज्यादा-से ज्यादा देखने का प्रयास किया। वहाँ का जो आन्दोलन है उसकी कुछ विशेषता केवल मैं बता देना चाहता हूँ। सबसे बड़ी विशेषता है कि पूरा मजदूर संगठन राजनीति से बाहर है। कहीं पर भी कम्युनिष्टों का प्रवेश नही है। व्यक्तिगत रूप से कहीं कोई अगर कम्युनिस्ट होगा लेकिन पूरे मजदूर आन्दोलन में कम्यूनिस्टों की कोई दखल नही, कोई हस्तक्षेप नहीं, क्योंकि पार्टी ही कमजोर है, ज्यादा लोग नहीं है। फिर हमने कहा सोशलिस्ट वगैरह; तो उन्होंने बताया सोशलिस्ट पार्टी कुछ दिन चली कुल मिलाकर इतने लम्बे चौड़े देश में सात हजार मेम्बर्स थे। उसमें भी पिछले जनवरी में टूट ही गयी। मालूम होता है कि यह बीमारी सोशलिज्म के अन्तर्गत ही है, उसमें भी स्पलीट हो गया। एक दल में साढ़े चार हजार और दूसरे दल में सवा दो हजार ऐसा बटवारा हुआ। वहाँ पूरा मजदूर आन्दोलन गैर राजनीतिक है। गैर राजनीतिक होने के कारण उद्योगों में एक यूनियन है। प्रायः एक उद्योग में एक ही यूनियन है, कहीं कहीं कटेगरी वाइज छोटी यूनियने हैं। जैसे अपने यहाँ है कि हमारा रिकोग्नीशन हो, हम निगोशियेशन करेंगे, टेबुल पर मैं रहूँगा दूसरे को नही जाना चाहिये, यह सारा झंझट है। इस तरह से एक यूनियन वहाँ दिखायी देती है। राजनीतिक दल के अंग नहीं होने के कारण जेनुइन ट्रेड यूनियनिज्म वहां है। इसके कारण दूसरी बात दिखायी देती है कि सारा लीडरशीप, शतप्रतिशत लीडरशीप मजदूरों का ही है। ऑल अमेरिकन के जो प्रेसीडेन्ट वहाँ थे जौर्ज विनी अभी उन्होने रिजाईन किया क्योंकि वे बहुत बीमार हैं, 85 साल के है। 55 से

लेकर पिछले सितम्बर तक रहे हैं। वे भी एक मजदूर थे। अर्थात जितना नेतृत्व है वह सारा नेतृत्व मजदूरों में से ही आया है, बाहर से नही। कोई राजनीतिक नेता उनका नेता नहीं है, या बाहर से आया हुआ पढ़ा लिखा ऐसा उनका नेता नही है क्योंकि पढ़े लिखे लोग इसमें जायेंगे किसलिये। यह हमारे देश में चलता है कि जरा यूनियन में लीडरी करेंगे तो फिर टिकट मिलेगी। इसी के ऊपर बार्गेनिंग के लिये प्रयास किया जायगा। ऐसी वहां गुंजायश नहीं है क्योंकि श्रमिक संघ राजनीति से ऊपर है। इसके कारण लीडरशीप मजदूरों से ही आया है।

"श्रमिक संघ वाद का प्रशिक्षण"

मजदूरों में लीडरशीप आने के कारण एक समस्या का अवश्य निर्माण हुआ कि यहाँ ज्यादा पढ़े लिखे तो नहीं हैं और सारा यूनियन का काम चलाने के लिये अलग अलग कानून और बाकी प्रोसीज्योर की जानकारी आवश्यक होती है। तो इसको पढ़ना पड़ता है लिखना पड़ता है। इसकी व्यवस्था थोड़ी बहुत यूनियनों के द्वारा होती है और थोड़ा बहुत यूनिवर्सिटी भी इसका कोर्स खोले हुए है। यानी ट्रेड यूनियन के नेताओं को आवश्यक जानकारी देने के लिये ट्रेड यूनियन की ओर से भी व्यवस्था है और यूनिवर्सिटी की ओर से भी व्यवस्था है। वे स्पेशल कौर्सेस भी रखती हैं। परीक्षा, डिग्री और डिप्लोमा नहीं है। स्पेशल कौर्सेस रखते हैं। केवल अटेन्डैंस सर्टिफिकेट देते हैं। इसमें से लीडर्स को एडुकेशन देने का प्रयास किया जाता है।

लेवर रिलेशन ब्यूरो

तीसरा है कि वहाँ जो मालिक और मजदूर सम्बन्ध है उसका नियमन जैसे भारतीय मजदूर संघ ने पहले से कहा था कि औद्योगिक सम्बन्धों का नियमन करने के लिये गैर सरकारी स्वतंत्र मशीनरी चाहिये, है। (आपको स्मरण होगा कि अभी जो इंडस्ट्रियल रिलेशन बिल आया उसका विरोध करते समय भी "भारतीय मजदूर संघ' ने कहा कि हमारे National Labour Comission (राष्ट्रीय श्रम आयोग) ने जैसा सुझाव दिया था उसपर अमल करते हुए मालिक मजदूर सम्बन्धों का नियमन करने के लिये स्वतंत्र, गैर सरकारी सेमी जूडिशियल मशीनरी होनी चाहिये) वहाँ ऐसी मशीनरी है। वहाँ लेबर रिलेशन ब्यूरो नाम की मशीनरी है। इस मशीनरी को सरकार के अन्दर नहीं रखा गया है। जो मालिक मजदूर सम्बन्ध है चाहे सरकारी उद्योगों का रहे या प्राईवेट उद्योगों का रहें, सरकार का जो औद्योगिक संबंध है, उसका नियमन वह मशीनरी करती है। सरकार बिल्कुल, अतिशय महत्वपूर्ण की कोई बात हुई तो हस्तक्षेप करती है वरना सरकारी हस्तक्षेप औद्यो-

गिक संबंधों में नहीं होता । सरकार का औद्योगिक संबंध विभाग नहीं है । यह जो नेशनल लेबर रिलेशन ब्यूरो है, यह गैर सरकारी सेमी जूडिशयल है, इंडीपेंडेट है, स्वतंत्र है । यह विशेषता वहाँ दिखायी दी । वहाँ जितनी यूनियने चलती हैं उसमें बहुत सारी यूनियने ऐसी है जिनकी शाखायें कनाडा में भी है ।

मजदूरों का सिटी कांसिल :

अब राजनीति से बाहर है ऐसा जब मैंने कहा तो आपके सामने प्रश्न होगा कि राजनीति से बाहर रहकर काम कैसे चल सकता है । हम भारतीय मजदूर संघ वाले कहते हैं कि राजनीति से दूर रहो तो लोग कहते हैं कि प्रिन्सिपुल अच्छा है लेकिन कोई झमेला खड़ा हुआ, 50 लोग डिसमिस हो गये फिर एम० पी० और एम० एल० ए० के पास जाये वगैर कैसे काम चलेगा । वह मिनिस्टर के पास ले जायगा, वे पार्लियामेन्ट में, असेम्बली में सवाल खड़ा करेंगे । ऐसा नहीं करेंगे तो समस्याओं से बचाने वाला कौन है । हमारे सामने यह सवाल रहता है । प्रश्न है कि उनके यहाँ कैसे चलता है तो वहाँ दो बड़ी पार्टियाँ हैं, आपने नाम सुना है डिमोक्रेटिक पार्टी पौर रिपब्लिक न पार्टी । दो बड़ी पार्टियाँ है । यूनियन अपना राजनीतिक सम्बन्ध कैसे रखती है । एक उद्योग में एक ही यूनियन होने के कारण उनके लिये यह संभव हो गया है कि हर शहर में, शहरों में जितनी यूनियने होंगी सब में से एक-एक दो-दो प्रतिनिधि मिलकर एक सिटी कौन्सिल तैयार करते हैं । एक उद्योग में एक यूनियन है इसलिये जितनी यूनियन होगी उन सब में एक-एक, दो-दों प्रतिनिधि मिलकर सिटी कौन्सिल बनाते है और राजनीतिक संबंध का काम सिटी कौन्सिल करतीं है । जैसे शहर में है उसी तरह से देहातों में भी रिवाज है और देहातों में रिजनल कौन्सिल हैं । जहाँ जिला है वहाँ डिस्ट्रीक्ट कौन्सिल होता है । किन्तु जितनी यूनियन हैं, जितने रिजन्स हैं या डिस्ट्रीक्ट है उन सब की यूनियन मिलकर कौन्सिल बनायेगी । यह जो कौन्सिले हैं वे राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित करती है । हर सिटी कौन्सिल अपने क्षेत्र में से जितने जन-प्रतिनिधि है चाहे राष्ट्रीय पार्लियामेन्ट के रहे, चाहे राज्य के पार्लियामेंट के रहें (उसको भी राज्य का पार्लियामेंट ही माना जाता है) चाहे वे कारपोरेशन या म्यूसिपैलिटी के रहें जितने निर्वाचिन प्रतिनिधि अपने क्षेत्र के हैं का हर सिटी कौन्सिल के पास रेकर्ड रहता है । मान लीजिये पटना का ही उदाहरण लें तो पटना सिटी कौन्सिल के नाम से लिखी जायगी कि ये तीन पार्लियामेंट के सदस्य पटना से चनकर गये हैं और 1 ' एम० एल० ए० पटना से चुनकर गये हैं ये 70 कारपोरेशन के मेम्बर्स यहाँ से गये हैं, सबके नाम एक के नीचे एक एक लिखेंगे । फिर हरेक का रेकर्ड नोट करेंगे । रेकर्ड कैसे नोट करते हैं ? मान लीजिये कि कोई मिस्टर एक्स है वे लिखेंगे कि हमारे एम० पी० थे यहाँ से चुने हुए फलां तारीख को पार्लियामेंट में

मजदूरों के बारे में अमुक बिल आया था तो उस समय इन्होंने मजदूरों के विरूद्ध में वोट दिया। ऊपर रहेगा तारीख, बिल का नाम और नीचे रहेगा कि विरोध में वोट दिया तो इसके लिए माईनस 25 मार्क्स देते हैं। 25 मार्क्स उनका कम कर देंगे। अमुक तारीख को मजदूरों के बारे में बिल आया तो इन्होंने मजदूरों के पक्ष में मत दिया तो इसके लिए प्लस 25 देंगे। माने हर जगह मार्क्स देते हैं। केवल जहाँ मजदूरों की मांग के खिलाफ सर्वसाधारण नागरिक है और इशेन्शियल सर्विसेज में है जैसे पानी है बिजली है यहाँ के मजदूर की जो माँग है, वह कभी-कभी जनता को अखड़ती है और जनता मजदूरों के खिलाफ हो जाती है। ऐसे समय आम जनता के दबाव के कारण यदि विधायक ने मजदूरों के खिलाफ वोट दिया हो तो उसकी बात समझकर कि भाई जनता का दबाव था वह क्या करता तो आप माईनस मार्क्स करते लेकिन कम मार्क्स करते हैं। माइनस 25 की जगह पर माइनस 10, माइनस 15 करेंगे। इस तरह हरेक का मार्क्स शीट तैयार होता है। पहले कालम में प्रतिनिधि का नाम, विधायक का नाम, दूसरे में तारीख रहेगी और तीसरे में माईनस और प्लस रहेगा। ऐसा रेकर्ड तैयार होता है और चुनाव के पहले यह रेकर्ड सबको सर्कुलेट किया जाता है। पब्लिश किया जाता है। दूसरे चुनाव के पहले सबको प्रश्नावली भेजी जाती है, जितने कैन्डिडेट्स खड़े होते हैं उन सब के पास प्रश्नावली भेजी जाती है। अमुक-अमुक प्रश्न अगले चार वर्षों में आने की संभावना है, इसमें आपका मतदान कैसा रहेगा? अब अपने देश में सब लोग आश्वासन देते हैं, सब लोग कहते हैं कि हम आपका यह काम करेंगे। यहाँ जागृति का स्तर छोटा है, इसलिऐ यहाँ धोखाघड़ी चल सकती है। वहाँ जागृति का स्तर ऊँचा है। इसके कारण किसी ने कहा कि हाँ हम आपके पक्ष में वोट देंगे ही और आपने वोट नहीं दिया तो इनको रास्ते में भी चलना मुश्किल होगा। लोग उसको कहेंगे कि अरे यह तो विश्वासघाती आदमी है। जागृति का स्तर ऊँचा होने के कारण गलत जवाब नहीं देता। यदि कहा कि करेंगे तो करते हैं नहीं करना है तो नहीं करेंगे, ऐसा सीधा कहते हैं। अपने यहाँ जैसी धोखा घड़ी चलती है, वैसी वहाँ नहीं चलती है। ऐसी प्रश्नावली भेजी जाती है दोनों कैन्डिडेट्स को और दोनों के जवाब आते हैं। उसको पब्लिश किया जाता है। रकैर्ड और प्रश्नावली के उत्तर को देखकर और दोनों कैन्डिडेट्स के साथ बात करते हुए सिटी कौन्सिल फैसला करती है कि इस एरिया में किसको समर्थन करना है। कहीं-कहीं मजदूर डिमोक्रेटिक को वोट देते हैं तो कहीं-कहीं रिपब्लिकन को वोट देते हैं। अब आपको यह आश्चर्य होगा कि मजदूर अलग-अलग कैन्डिडेट्स के साथ अलग-अलग सौदा कैसे कर सकते हैं। क्योंकि हमारे यहाँ संभव नहीं है।

हमारे यहाँ पार्टी का आदेश चलता है। अब इंडस्ट्रीयल रिलेशन बिल भी आया। मान लीजिये कि श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी के जैसे कोई प्रवक्ता हैं, वे विरोध भी करेंगे लेकिन वोट के समय विरोध नहीं कर सकते। तो हमारे यहाँ पार्टी का आदेश चलता है। मान लीजिये कि इंडस्ट्रीयल रिलेशन बिल यदि पार्लियामेंट में आता है तो हम जानते हैं कि श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी कह कर विरोध करते, भाषण जोरदार देते, अखबारों में आ जाता और यदि वोट का मौका आता तो सरकारी दल के मेम्बर होने के नाते श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी को झक मारकर सरकार के पक्ष में बोट देना पड़ता। वरना डिसीप्लीनरी ऐक्शन उनके ऊपर होगा। यह हमारे यहाँ है।

मजदूरों के सम्बन्ध में निर्णय लेने की स्वतंत्रता :

हमने उनको कहा कि डिमोक्रेटिक और रिपब्लिकन लोग आपके यहाँ अलग-अलग सौदा कैसे करते हैं? उन्होंने कहा हमारे यहाँ डिफिकल्टी नहीं हैं। मजदूरों के संगठन की ताकत अमेरिका में इतनी बड़ी है, क्योंकि मल्टीप्लिसीटी ऑफ यूनियन्स नहीं। एक-एक उद्योग में एक से अधिक यूनियन्स नहीं है। एक उद्योग में एक ही यूनियन है इसके कारण औद्योगिक क्षेत्र जहाँ है वहाँ मजदूरों की ताकत इतनी बढ़ी है कि डिमोक्रेटिक पार्टी के विधायकों ने और रिपब्लिकन पार्टी के विधायकों ने अपने हाई कमान को बोलकर रखा है कि महाराज बकिये जो कुछ बिल होगा उसकी बात छोड़िये, मजदूरों के बारे में जहाँ सवाल आयेगा आपको हमें स्वतंत्रता देनी चाहिये, वोटिंग में आप व्हीप मत लगायें, आदेश मत दीजिये, हम अपनी इच्छा के अनुसार वोट देंगे और यदि आपने व्हीप लगाया और स्वतंत्रता नहीं दी गयी तो हमारे एरिया में हम काम नहीं कर सकते। इसके कारण जहाँ-जहाँ मजदूरों के प्रश्न पर वोटिंग होती है वहाँ कोई व्हीप नहीं रहता। इसका एक और कारण भी दिखायी देता है। एक ही प्रश्न पर डिमोक्रेटिक पार्टी के लोग मजदूरों के पक्ष में वोट देते हैं और कुछ लोग विरोध में वोट देते हैं। रिपब्लिकन पार्टी के कुछ लोग पक्ष में वोट देते हैं, कुछ लोग विरोध में वोट देते हैं। अलग-अलग लोगों का अलग-अलग वोटिंग होता है; पार्टी निरपेक्ष, दल निरपेक्ष वोटिंग मजदूरों के प्रश्न पर है। ऐसा दिखायी देता है। इसका मतलब है कि ज्यादातर जो औद्योगिक क्षेत्र है वहाँ से चुनकर जाने वाले रिपब्लिकन रहे या डिमोक्रेटिक वह मजदूरों के पक्ष में वोट देता है। हाई कमान को इसकी बात माननी पड़ती है कि राजनीतिक दल की ऑफिशियल पौलिशी जो कुछ भी रहे लेकिन उसके ऊपर आदेश नहीं देंगे। व्हीप नहीं देंगे। यह दोनों दल के हाई कमान को मानना पड़ता। मजदूरों की एकता बड़ी जबरदस्त है और यदि हम ऐसा व्हीप लगायेंगे तो सारे मजदूर मेरे खिलाफ हो जायेंगे और अगले बार हमारे

कैन्डिडेट्स चुनकर नहीं आयेंगे। यह जानने के कारण हाई कमान ने यह बात मान लिया कि व्हीप नहीं लगाया जाये। तो किसी मजदूर के प्रश्न पर व्हीप नहीं है। अलग वोटिंग होता है।

हमारे यहाँ आज यह चलता है कि मजदूर और मजदूर नेता मिनिस्टर के पीछे चक्कर काटते है। मिनिस्टर की दाढ़ी में हाथ लगाते है। ऐसा वहाँ नहीं है। वहाँ सरकार, मिनिस्टर और प्रेसिडेंट यूनियनो के पास आते हैं और कहते हैं कि साहब विचार कीजिये। नयी पौलिसी बनानी है। आप विरोध मत कीजिये। मजदूर मिनिस्टर के पास नहीं जाते हैं, मिनिस्टर मजदूरों के पास आते हैं। ऐसी वहाँ की परिस्थिति है। यह एकता के कारण है। इस तरह से कुछ विशेषताएँ वहाँ की है।

राष्ट्र के प्रति युनियनों की प्रतिज्ञा

मैं एक और बात छोटी सी बता दूँ वहाँ के मजदूर आन्दोलन के बारे में दो-तीन सिस्टम ऐसी है कि जिसपर यहां के भी ट्रेड यूनियन में विचार किया जाना चाहिये। वस ट्रेड यूनियन के अन्तर्गत इन्टेगरल बार्ते नहीं है किन्तु कुछ प्रथाएं हैं। ये जो जौर्ज विनी 55 से लेकर पिछले सितम्बर तक 24 साल तक प्रसिडेंट रहे, वहाँ कुछ प्रथायें पहले नहीं थी उन्होंने उसको शुरू की। मुझे लगता है कि उसपर विचार करना चाहिए। एक प्रथा यह शुरू की कि ट्रेड यूनियन की कोई भी बैठक रहे या कौंफ्रेंस रहे चाहे छोटी यूनियन की वर्किंग कमिटी की बैठक रहे, या बड़ी नेशनल लेवेल की कौंफ्रेंस हो हर जगह एक प्रोसीज्योर फौलो किया जाता है। प्रारम्भ में उसमें राष्ट्रीय गीत होता है। सब लोग खड़े होते हैं। सब लोग एक स्वर में राष्ट्रीय गीत गाते हैं। जहाँ यूनियने बड़ी बडी है वहाँ बैण्ड वगैरह भी लाते हैं और बैण्ड के साथ राष्ट्रीय गीत होता है। उसके बाद सब लोग बैठ जाते हैं, सुनते हैं और किसी न किसी प्रीस्ट को बुलाया जाता है। यह आवश्यक नहीं है कि वह किसी एक रेलीजन का रहना चाहिये। वह कैथोलिक भी हो सकता है, प्रोसिस्टेन्ट भी हो सकता है, यहूदी भी हो सकता हैं, मुसलमान भी हो सकता है। हिन्दू रहेंगे तो उनको भी बुलाते हैं, बौद्ध रहेंगे तो उनको भी बुलाते हैं। उन्हें कोई परहेज नहीं है। वहाँ धर्म का सवाल नहीं है। लेकिन भगवान का नाम लेकर कुछ न कुछ मार्गदर्शन, उपदेश और प्रवचन आये हुए सब लोगों को देना है। यह कार्यक्रम होता है। अभी कुछ यूनियन में ऐसा होता है जहाँ कोई प्रोसीसटेन्ट है, मुसलमान है, कोई कैथोलिक है, कोई यहूदी है तो उसको वे बारी-बारी से बुलाते हैं लेकिन भगवान का नाम और उनके नाम से एक संस्कार लोगों के मन में देते हैं। यह दूसरी प्रथा उन्होंने चलायी है। और

तीसरी बात कि प्रार्थना होने के पश्चात् सब खड़े हो जाते हैं। बिल्कुल छोटी यूनियन की वर्किंग कमिटी की मिटींग से लेकर नेशनल कोन्फ्रेन्स तक यह प्रथा है। सब लोग उठकर खड़े ही जाते हैं और प्रतिज्ञा लेते हैं। प्रतिज्ञा का एक फार्म है आई प्लेज एलीजियन टू दी फ्लैग ऑफ यूनाईटेड स्टेट्स, टू दी कंस्टीच्यूशन ओफ दी यूनाईटेड स्टेट्स ऐण्ड दी रिपब्लिक फौर।" यानी हम अपने राष्ट्र के संविधान, अपने राष्ट्र के ध्वज, अपने राष्ट्र के रिपब्लिक के प्रति वफादार रहेंगे। इस तरह की प्रतिज्ञा सब इकट्ठा लेते हैं। इस तरह की प्रतिज्ञा सब लोगों के मुख से हो गयी। हर मिटींग के पहले, हर कोन्फ्रेन्स के पहले यह होता है। नेशनल कोन्फ्रेन्स में जेनरल सेक्रेटरी, प्रेसीडेन्ट; ऑफिस वेयरर्स का जब चुनाव हो जाता है उसके पश्चात् जो जेनरल सेक्रेटरी है जो सारे देश के हैं, ऐसे कांफ्रेंस में उपस्थित होते और जो नया चुनाव हो जायगा उसके बीच में ब्रेक होगा। चाय पान होगा फिर से लोग इकट्ठा हो जायेंगे। पहला काम (विधि) होता है कि लाउड स्पीकर के एक तरफ नेशनल जेनरल सेक्रेटरी खड़े होते हैं जो सारे ऑर्गेनाईजेशन के हैं और दूसरी तरफ सेक्रेटरी जेनरल। फिर एक-एक शब्द बोलते हैं—"हाय हाथ मिस्टर सो ऐण्ड सो न्यूली इलेक्टेट प्रेसीडेन्ड ऑफ दीस ऑर्गेनाईजेशन।" जैसा हमारे यहाँ प्रतिज्ञा लेते हैं और उसमें है कि मेरे पास जो लोगों ने विश्वास पूर्वक काम दिया है, मैं भगवान का स्मरण करते हुए, इमानदारी से पक्षपात न करते हुए, संविधान के मुताबिक काम करूँगा। इस तरह की प्रतिज्ञा सेक्रेटरी जेनरल हरेक फेडरेशन के सेक्रेटरी जेनरल और प्रेसीडेन्ट को देते हैं। यह भी एक नयी पद्धति वहाँ है। अब इसको लेना नहीं लेना एक सवाल है। ऐसी कुछ पद्धतियाँ हैं।

तानाशाही देशों के स्वरूपों में भी भिन्नता है–मजदूर सारा निर्णय स्वयं लेते हैं–

अब जो मैंने कहा कि वह एक अमेरिका का मोड्ल, वेस्टर्न पार्लियामेंट्री डिमोक्रेटिक कंट्रीज का अलग मोड्ल, जिसमें ग्रेट ब्रिटेन भी आता है। डिक्टेटोरियल कट्रीज का अलग-अलग मोडल भी दिखायी देता है। यूगोस्लाविया का मोड्ल सबसे अलग है। कम्यूनिस्ट कँट्रीज होते हुए भी उसमें से हमलोगों को सिखने लायक बहुत बाते है। बिल्कुल संक्षेप में उसकी थोड़ी सी विवरणी दूँगा। यूगोस्लाबिया में एक सिस्टम चल रही है। 1974 में नया कंस्टीच्यूशन जब उन्होंने बनाया, उसके मुताबिक एक नयी सिस्टम चल रही है। इस सिस्टम में यह कहा गया है कि हर फैक्ट्री में मैनेजमेंट पूरी मजदूरों की, सारा

निर्णय मजदूर लेते हैं। एक एक फैक्ट्री के मजदूर अपनी फैक्ट्री का प्लानिंग करेंगे फिर वह फैक्ट्री जिस उद्योग को होगी उस उद्योग में सारे फैक्ट्रीज का जो निर्णय होगा वह मिलकर इंडस्ट्रीज का प्लान होगा। अलग-अलग रिजन्स में अलग-अलग इण्डस्ट्रीज। इस तरह रिजनल और इडस्ट्रीयल प्लान तैयार होता है। फिर ऊपर नेशनल प्लान तैयार होता है। प्लान जो है वह नीचे से ऊपर जाता है और फिर वह खेती में मजदूर हो, फैक्ट्री का मजदूर हो, अपने उद्योग के बारे में स्थानीय प्लान बनाते हैं। उसी उद्योग का रिजनल प्लान बनता है उसी उद्योग का राज्य का प्लान बनता है इन सब का इंटीग्रेशन नेशनल केवल पर होता है। फैक्ट्री के काम में मजदूर अपना काम किस तरह चलाते हैं। यह ठीक है कि मजदूर कोई टेकनीकल तो होते नहीं है इसलिये टेकनीशियन की सहायता दी जाती है। वहफायनेंश नहीं जानता है इसलिये फायनेन्शियल एडवाईजर उनको दिया जाता है। लेकिन सारा निर्णय लेने का अन्तिन अधिकार मजदूरों का है। सभी मजदूरों को मिलाकर '-वर्कर्स कांसिल चुना जाता है। वहाँ अलग-अलग यूनियन्स नहीं है। यूनियन्स तो एक ही है, जैसे हर कम्यूनिस्ट कन्ट्रीज में। एक ही यूनियन चलता है। जैसे जो युगोस्लाविया में ट्रेड यूनियन है वह एकदम सरकार के दलाल के रूप में है, मध्यस्थ के रूप में है, ऐसा नहीं है।

हर मजदूर दल का सदस्य नहीं—

यह देखा गया कि वहाँ कम्यूनिस्ट पार्टी भी है, ट्रेड यूनियन भी है। वहाँ वर्कर्स कौंसिल का चुनाव भी होता है। अब मान लीजिए कि एक फैक्ट्री में 500 सदस्य हैं, यह जरूरी नहीं है कि सारे पाँच सौ मेम्बर्स, वर्कर्स ट्रेड यूनियन का मेम्बर रहेगा ही या और चन्दा देगा ही ऐसा नहीं है। जिनकी इच्छा है ट्रेड यूनियन के मेम्बर हो सकते हैं। ऐसा भी आवश्यक नहीं है कि सारे लोग कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर होंगे ऐसी बात नहीं है। जिनकी इच्छा है पार्टी के मेम्बर होंगे। जिनकी इच्छा नहीं है वे पार्टी के मेम्बर नहीं होंग। दो तरह की व्यवस्था है। अब वर्कर्स कौंसिल का चुनाव होता है। इस चुनाव में किसी तरह का दबाव नहीं है। जो वर्कर्स कौंसिल मे चुनकर आते हैं वे फायनल निर्णय लेते हैं। कोई भी फायनल निर्णय लेने के पहले मिटिंग बुलाकर उनको समझाते हैं कि यह निर्णय हम ले रहे हे। क्यों ले रहे हैं इसमें अब एक बात जरूर होती है कि कोई भी निर्णय लेने में कभी-कभी देरी हो जाती है। उद्योगों में कभी-कभी ऐसे निर्णय लेने पड़ते हैं जो तुरत लेना चाहिए नहीं तो समय निकल जायेगा। ऐसी परिस्थिति हो तो वहाँ नुकसान होता है, क्योंकि इसमें देरी होती है। किन्तु निर्णय लेने की प्रक्रिया मजदूरों के हाथ में है। अन्तिम अधिकार

मजदूरों के हाथ में है और इसके कारण उन्होंने जो अपनी दिशा अभी रखी है वह ऐसा है कि हर जगह इस तरह से तीन ऑर्गेनाइजेशन रहता है—एक 'ऑर्गेनाईजेशन कौंसिल ऑफ वर्कर्स'। कम्युनिस्ट पार्टी है, लेकिन उसके मेम्बर बने न बने उनकी इच्छा पर है। दूसरा ऑर्गेनाईजेशन ट्रेड यूनियन सभी को मेम्बर्स बनना चाहिए यह नियम नहीं है। तीसरा ऑर्गेनाईजेशन है सब मजदूरों को मिलाकर 'सेल्फ ऑर्गेनाईजेशन' ऐसा नाम दिया गया है। सब मजदूरों को मिलाकर एक ऑर्गेनाईजेशन याने—सेल्फ ऑर्गेनाईजेशन। इसके मेम्बर्स सभी हैं। यह सेल्फ ऑर्गेनाईजेशन वर्कर्स कौंसिल द्वारा काम चलाता है। वहाँ अन्तिम आदर्श, लक्ष्य यह रखा है कि फैक्ट्री का कारोबार उद्योगों का कारोबार सेल्फ ऑर्गेनाईजेसन, सभी मजदूरों को मिलाकर जो होता है केवल पार्टी के लोग नहीं, केवल ट्रेड यूनियन नहीं तो सेल्फ ऑर्गेनाईजेशन माने सभी मजदूरों का मिलाकर जो है, वह अपने चुने हुए निर्वाचित प्रतिनिधियों के वर्कर्स कौंसिल के द्वारा अपने उद्योग का कारोबार चलाये। इन सब दृष्टि से सेल्फ ऑर्गेनाईजेशन में जो मजदूर है यानी सारे मजदूर और वर्कर्स कौंसिल से चुनकर जानेवाले मजदूर इनको मैनेजमेंट का तंत्र सिखाना चाहिए। मैनेजमेंट की बारीकियां सिखानी चाहिये। इस दृष्टि से काम करने का उत्तरदायित्व यह ट्रेड यूनियन का अपने पास लिये हुए है।

लेकन उन्होने तय किया है कि कम से कम जो एक उद्देश्य तय हुआ है कि ट्रेड यूनियन की भी आवश्यकता नहीं रहनी चाहिए उस अवस्था में जिस अवस्था में सेल्फ ऑर्गेनाईजेशन के लोग यानि मजदूर ज्यादा प्रशिक्षित हो जायेंगे। जहाँ चुने हुए वर्कर्स कौंसिल के प्रतिनिधि ज्यादा प्रशिक्षित हो जायेंगे, अपने-अपने उद्योगों का कारोबार देखने की क्षमता आ जायेगी। उस परिस्थिति में ट्रेड यूनियन की अलग से रहने की आवश्यकता नहीं रह जायेगी। वे अपना कारोबार देख लेंगे। जिस तरह से कॉर्ल मार्क्स ने कहा कि राज्य और सरकार नाम की जो संस्था है वह नष्ट हो जायेगी। उन्होंने कहा कि ट्रेड यूनियन की भी आवश्यकता नहीं रहेगी क्योंकि सारे मजदूर प्रशिक्षित हो जायेंगे और अपने चुने हुए प्रतिनिधि के द्वारा कारोबार चलायेंगे तो फिर ट्रेड यूनियन की क्या आवश्यकता है। बीच की अवस्था में ट्रेड यूनियन की आवश्यकता इस माने में समझी जानी चहिए कि जिनके हाथ में सारे मैनेजमेंट का अधिकार दिया गया है ऐसे मजदूर को अधिकारों को ठीकसे पालन करने की क्षमता प्राप्त हो जाये। इस दृष्टि से प्रशिक्षित करना, मार्गदर्शन देना, यह टेम्पोरेरी फेज है उतना ही ट्रेड यूनियन का महत्व समझना चहिये ज्यादा नहीं। यह विचार आया और इस विचार के आने के कारण

वहाँ तीसरा विचार भी आया। वहाँ तीन रिपब्लिक्स हैं और बकिये ट्रायबल्स एरियां हैं। 1977 में वहाँ सारे स्टेट के प्रमुख इकट्ठे हुए थे और इनकी चर्चा अखबारों में आयी थी। हमको भाषान्तर करते हुए बतायागया था। उस मिटिंग में यह चर्चा आयी थी कि यदि राज्य नष्ट होने वाला है, ट्रेड यूनियन का भी विचार करते हैं कि नष्ट होना चाहियें। उसपर यह विचार आया कि कम्युनिस्ट पार्टी की क्या आवश्यकता है। कम्युनिस्ट पार्टी को भी नष्ट होना चाहिये। फिर रिपब्लिकन प्रेसिडेंट के जो पोस्ट हैं वह नष्ठ क्यों न हो। इस तरह की चर्चा उस समय वहाँ चली। इसमें एक बहुत बड़ा अड़ंगा यह है कि प्रयोग अच्छा है, जैसा कि हमारे लिए उपयुक्त नहीं होगा। भारतीय ढ़ंग की पुनरैचना में युगोस्लाविया के प्रयोग का जितना उपयोग हम में हो सकता है उतना और किसी देश का नहीं होगा। हर देश का थोड़ा-थोड़ा उपयोग होने वाला है लेकिन युगोस्लाविया में जो प्रयोग चल रहा है उसका प्रयोग हम में ज्यादा होने वाला है। किन्तु उसमें सबसे बड़ी दुर्भाग्य की बात यह है कि युगोस्लाविया का प्रयोग तो अच्छा है, पूरी तरह से स्वीकार करेंगे ऐसा नहीं है, क्योंकि स्टेट ऑनरशिप हमारे यहाँ स्वीकृत नहीं है तो भी जो कुछ चल रहा है एक बार एक्सपेरीमेंट 25 साल, 20 साल, 50 साल तक चले तो अच्छा होगा। लेकिन गड़बड़ यह है कि युगोस्लाविया एक राज्य है। ऐसा एक राष्ट्रीत्व की जागृति वहाँ नही हैं, राष्ट्रीय एकता नहीं है। तीन अलग-अलग राष्ट्र है, कुछ जिले है इसके कारण मार्शल टिटो का दबाव यदि नष्ट होता है, मार्शल टिटो की मृत्यु होती है तो दूसरा कोई भी अल्टरनेटिव व्यक्ति नहीं हैं जो सबको पकड़ कर रख सके। कही ऐसा न हो जाय कि युगोस्लाविया के टुकड़े टुकड़े हो जाँय और अलग अलग राष्ट्र बन जाँय। यदि ऐसा हुआ तो यह जो एक अच्छा प्रयोग है आगे चलेगा या नहीं चलेगा, इसमें शंक ही सकता है। लेकिन यह राजनीतिक संभावना दूर रखी गयी तो प्रयोग चल रहा है एक अनोखा प्रयोग है। पूरा जैसा है वैसा किसी के लिये उपयुक्त होगा ऐसा नहीं है।

युगोस्लाविवयन एक्सपेरिमेंट इज नौट फौर एक्सपोर्ट :

जहाँ मैं गया वहाँ लोगों ने बताया कि साहब आप बाहर से आये हैं एक बात हम आपको बताना चाहते हैं कि हम नया प्रयोग कर रहे हैं। कितनी सफलता मिलेगी, हमको पता कहीं। हम इमानदारी से कोशिश कर रहे हैं। लेकिन यदि हम आपको यह दिखा रहे हैं तो इसका मतलब नही हैं कि हम यह सिस्टम आपको भी अपने देश में लाना चाहिये, ऐसा सुझाव दे रहे हैं। उनके वाक्य थे कि "युगोस्लावियन एक्सपेरीमेंट इज नौट फोर एक्सपोर्ट"। यहाँ का जो प्रयोग है वह एक्सपोर्ट करने के लिए नहीं है। हमारे देश के लिये यह सुटेबुल होगा ऐसा हमको

लगता है। आपके देश के लिए दूसरी चीज सुटेबुल होगी आप विचार कीजिये। इस तरह का उदाहरण रखकर प्रयोग हुआ है।

हमें क्या करना है :

अलग-अलग देश के ट्रेड यूनियन का अलग-अलग मोडेल है। हम लोगों को, भारतीय मजदूर संघ के लोगों को इन सब का अध्ययन भी करना पड़ेगा। अलग अलग देशों की अलग-अलग परिस्थितियाँ क्या है? उसमें कैसा मोडेल इवोल्भ हुआ है, उसके गुण क्या हैं, दोष क्या है, एडभान्टेज क्या है, डिसएडभान्टेज क्या है? उसमें से हमारे उपयुक्त कितना है, त्याज्य कितना है इसका भी अध्ययन करना होगा। साथ-साथ हमारी जो परम्परा है, हमारी जो संस्कृति है उससे मेल खाने वाली कौन सी रचना हैं। यह भी सोचना होगा और दोनों का मेल तीसरी बात से लगाना होगा। तिसरी बात से मेल रखना होगा कि आगे हिन्दुस्तान की सूरत शक्ल कैसा बनाना चाहते हैं। किस तरह का हिन्दुस्तान का समाज रहे और यहाँ कि सामाजिक आर्थिक रचना, सोशियो इकोनौमिक औडर होनी चाहिये। भविष्य में हमारे देश की रचना हम कैसा करना चाहते हैं इसको ध्यान में रखते हुए हमारी जो सनातन काल से चली आयी हुई संस्कृति है। परम्परा है। इसकी विशेषताओं के आधार पर आज की परिस्थिति में, भविष्य के प्रकाश में कौन सी रचना उपयुक्त होगी यह विभिन्न देशों के प्रयोग का विषय है। उसमें से त्याज्य क्या है, ग्राह्य क्या है इसका निर्णय करते हुए हमें आज की रचना बनानी पड़ेगी। इस दृष्टि से हमें भविष्य के चित्र की आवश्यकता है। हमारी संस्कृति और परम्पराओं की विशेषताओं की जानकारी की आवश्यकता है, सम्पूर्ण जगत में जो विभिन्न तरह के प्रयोग चल रहे हैं उनकी जानकारी की आवश्यकता है।

"हम पोलिटिशियन नहीं राष्ट्र निर्माता हैं।"

तीनों के आधार पर हमें नयी रचना करनी है और इस तरह की रचना करने के लिये भारतीय मजदूर संघ कटिबद्ध है। हमने यह निश्चय किया है कि इस तरह की रचना करेंगे। एक लम्बा विचार लेकर हम काम कर रहे हैं। राष्ट्र का पुर्नानिर्माण का उद्देश्य लेकर काम कर रहे हैं। पौलिटिशन का टाईम-होराईजन (Time horizon) छोटा होता है। हम पौलिटिशिन नहीं हैं राष्ट्र निर्माता है। सम्पूर्ण राष्ट्र का निर्माण करना हमारा ध्येय है। इस दृष्टि से किसी ने कहा कि पौलिटिशियन का टाईम होराईजन इलेक्शन टू इलेक्शन होता है। स्टेट्समैन का टाईम होराईजन फ्रोम डिकेड टू डिकेड होता है, दशक से दशक तक होता है।

राष्ट्र निर्माता का टाईम होराईजन फ्रोम सेन्चुरी टू सेन्चुरी होता है शताब्दी से शताब्दी तक उसका टाईम होराईजन होता है। ऐसा एक लॉग रेन्ज भीजन(दूर दृष्टि) दूर का सोचते हुए राष्ट्र निर्माण करने वाले "भारतीय मजदूर संघ' के लोग सभी बातों पर विचार करते हैं। पौलिटिशियन ने बीच में जो भी गड़बड़ी की होगी, उनको करने दीजिये, अपनी प्रकृति के अनुकूल हरेक पौलिटिशियन गड़बड़ी कर सकता हैं और जितना ही देश का नुकशान किया होगा उसकी पूर्त्ति करते हुए आगे की समाज रचना को भारतीय मजदूर संघ देश के सामने रखेगा। उस चित्र को प्रत्यक्ष में लाने के लिये जो तैयारी करनी है, वह तैयारी भी भारतीय मजदूर संघ करेगा और पौलिटिशियन के गड़बड़ियों के कारण देश का नुकसान हुआ उसकी पूरी पूर्ति करते हुए एक नवराष्ट्र का निर्माण भारतीय मजदूर संघ करेगा, यह विश्वास मन में लेकर हमारा एक एक कार्यकर्त्ता काम करे, यही यथेष्ट है।

दत्तोपंत ठेंगडी

भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक महामंत्री श्री दत्तोपंत ठेंगडी द्वारा 10 दिसम्बर, 79 को पटना में दिये गये भाषण से साभार।

—प्रकाशक

मूल्य—1.50

भारतीय मजदूर संघ के लिए लोकवाणी प्रिंटिंग प्रेस, नयाटोला, पटना-४ द्वारा मुद्रित।